B.A. PART - 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र 1

मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य शेषभाग - 4

प्रश्न:- रीतिकालीन काव्य में रीतिमुक्त कवियों का स्थान बतायें?

उत्तर:- शेषभाग :-

3. वियोग-वर्णन की प्रधानता एवं शास्त्रीयता का अभाव :-

रीतिमुक्त कवियों के प्रेम में प्रीति की विषमता को स्वीकार किया गया है, अतः वियोग का वर्णन सँयोग की अपेक्षा अधिक हुआ है। रीतिबद्ध कविता में वियोग-वर्णन के सम्पादन के लिए ऊहात्मकता का सहारा आवश्यकता से अधिक लिया गया है, कहीं गुलाब-जल नायिका के शरीर का स्पर्श करने से पूर्व ही उड़ जाता है, कहीं जाड़े की ऋतु में विरहविदग्धा नायिका को देखने के लिए उसकी सखी गीले कपड़े पहनकर आती है तथा कहीं नायिका घड़ी के पेंडुलम की तरह हिलती-डुलती है, किन्तु इसके विपरीत रीतिमुक्त कवि वेदना की निवृत्ति के लिए नाप-जोख का सहारा नहीं लेते। "विरह वेदना का तप्त स्वर्ण है" यह उक्ति चरितार्थ होती है। विरहाग्नि में तपकर शुद्ध हो जाने के कारण इनके काव्य में हृदय की व्याकुलता, अश्रुपात, नेत्रों की विवशता, दैन्य, करुणापूर्ण उपालम्भ, दर्दभरे प्रेम के मार्मिक चित्र अधिक हैं। इन कविताओं की मार्मिकता व्यक्तिगत जीवन की निराशा और पीड़ा के उदात्तीकरण के फलस्वरूप अधिक बढ़ गयी है। सारांश रूप में इन रीतिमुक्त कवियों के विलक्षण प्रेम की पीर को समझने के लिए हृदय की आँखें चाहिए।

रीतिबद्ध कवियों का प्रेम-वर्णन शास्त्रीय पद्धति या लक्षण-ग्रन्थों के आधार पर होने के कारण उसमें वियोग की सभी मनोदशाओं का चित्रण किया गया है। इसके विपरीत वियोग का अविच्छिन्न प्रवाह रीतिमुक्त कवियों के काव्य में ही हुआ है। यहाँ अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, जड़ता, व्याधि की दशाओं का नपा-तुला वर्णन नहीं किया

गया है। इसी कारण पूर्वराग एवं मान के चित्र भी स्वल्प मात्रा में हैं। निराशा की चरम स्थिति में प्रेमी अपना दैन्य-निवेदन करके प्रिय के हृदय में करुणा का भाव जाग्रत करना चाहता है।

रीतिमुक्त कवियों ने वियोग की शास्त्रीय दशाओं का चित्रण नहीं किया है। इसमें स्मृति एवं आनन्द का ही विशेष वर्णन किया गया है। रीतिमुक्त कवियों ने स्मृति की दशा का चित्रण भी रीतिबद्ध कवियों से भिन्न रूप में किया है। रीतिबद्ध कवियों की दृष्टि बाह्योन्मुख होने के कारण प्रिय की सुन्दर आँखों पर तीक्ष्ण कटाक्ष एवं रसभरी चितवन पर अधिक रहती थी। रीतिमुक्त कवियों ने अपनी कविता में प्रिय की स्मृति से लिपटे हुए स्थानों की पृष्ठभूमि का वर्णन किया है। करील-कुँज और यमुना के तट पर सोई हुई स्मृतियों को जगा देने से पहले सुख की तुलना वर्तमान सुख से करने को बाध्य करते हैं।

स्मृतियों की विषादपूर्ण व्यंजना "जमुना की हेली, वह पानी बतियाँ" में सुन्दर रूप से व्यंजित है। प्रिय के भोग-व्यापारों की स्मरण इन कवियों की विरहिणी नायिकाएँ नहीं करतीं।

उन्माद की दशाओं का मूर्तरूप रीतिमुक्त कवियों के समान रीतिबद्ध कवियों ने चित्रित नहीं किया है। एक स्थिति की अपेक्षा एक साथ अनेक स्थितियों का वर्णन करने के कारण काव्य में नाटकीयता आ जाती है। ये कभी चेतन स्थिति का वर्णन करते हैं तो कभी अचेतन स्थिति को

रीतिमुक्त कवियों ने वियोगजन्य कृशता, शारीरिक क्षीणता, विरह-ताप की जलन तथा पीड़ा का अत्युक्तिपूर्ण वर्णन नहीं किया है।

परन्तु जहाँ किया भी है, वह उपहासास्पद नहीं होने पाया। संदेशवाहक के रूप में रीतिबद्ध कवियों ने दूती-दूत के रूप का वर्णन किया था, फिर भी मेघ, पवन आदि प्रकृति के उपकरण तत्कालीन सामन्तीय वातावरण में उपयुक्त प्रतीत नहीं हुए। स्वच्छन्द कल्पना को विहार करने का पर्याप्त अवसर होने के कारण रीतिमुक्त कवियों ने उन्हें पुनः अपनाया।

5. प्रकृति निरूपण में अन्तर :-

हिन्दी-साहित्य में प्रकृति का उद्दीपनकारी रूप प्रस्तुत करने की पद्धति षट्ऋतु वर्णन तथा बारहमासा के अन्तर्गत प्राचीन समय से चली आ रही थी। आभिजात्य तथा लोक-साहित्य, दोनों में इस परम्परा का प्रयोग होता था। इस परम्परा को रीतिकालीन कवियों ने भी अपनाया। विरहीजनों को जलाने के लिए इनकी कविता में शीतल समीर चलता है। नायिका के केशों को सजाने के लिए पुष्प खिलते हैं तथा नायिका को प्रियतम का स्मरण दिलाने के लिए कोयल बोलती है। बसन्त और पावस तो छः ऋतुओं में अत्यधिक उद्दीपक हैं। इन ऋतुओं को काव्य तथा कामशास्त्रीय दोनों परम्पराओं में उद्दीपनकारी माना गया है। रीतिकाल के रीतिबद्ध कवियों के समान ही रीतिमुक्त कवियों द्वारा भी इन दोनों ऋतुओं को इसी रूप में स्वीकार करने पर भी रीतिबद्ध काव्य की अपेक्षा भावानुभूति की सघनता रीतिमुक्त कविता में अधिक प्राप्त होती है। कोकिल और चातक की वाणी द्वारा दोनों कवि इन ऋतुओं में विरहिणियों का विरह उद्दीप्त करते दिखाई देते हैं; परन्तु घनानन्द और

द्विजदेव में अन्तःकरण की जो व्याकुलता मिलती है, वह पद्माकर तथा देव में नहीं।

रीतिमुक्त धारा के कवि गुमान मिश्र की कविता प्रकृति उद्दीपन के बंधन से मुक्त है, रीतिमुक्त कवि संस्कृत-कवियों (कालिदास, भवभूति आदि) की तरह प्रकृति का खुला दर्शन करते हैं, 'विरह-वारिश' में द्विजदेव की तथा बोधा ने भी प्रकृति का वर्णन स्वच्छन्द वृत्ति से किया है।

देश के सांस्कृतिक पर्वों, त्यौहारों आदि की ओर भी इन कवियों का ध्यान आकर्षित हुआ है। पद्माकर ने होली का प्रेमपूर्ण चित्रण बहुत ही सहृदयतापूर्वक किया है, परन्तु उस प्रसंग में अधिकांश रीतिबद्ध कवियों ने गुलाल की गर्द तथा केसर की कीच का ही वर्णन किया है। नायिका की शोभा और भाव-भंगिमा को घनानन्द ने होली-वर्णन में अत्यधिक सुन्दर रूप में चित्रित किया है। नायिका के हृदयस्थ भावों को अत्यन्त प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत करने के कारण नाटकीयता के पुट ने और अधिक सजीव बना दिया है। देश के सांस्कृतिक वैभव का परिचय ठाकुर की रचना में बुन्देलखण्ड के आनन्दोल्लासमय जीवन का चित्र अंकित होने से सहज ही मिल जाता है। ठाकुर ने अखतीज, गनगौर, वटसावित्री, होली आदि के भावपूर्ण चित्र खींचकर प्रदेश की संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत की है, जो रीतिबद्ध कवियों में नहीं मिलती।

पग

डॉ० समदर्शी कुमार

विभाग- हिन्दी (डा.रि.मा.म.क) (B.R.A.B.U.M.)

मो० न०- 7909046087

दिनांक - 12/02/2022